

शिक्षा का अधिकार

R.N.I. No.-UTTHIN/2014/59625

वर्ष 11 अंक 07

हरिद्वार, बुधवार 25 दिसम्बर 2024

पाक्षिक

मूल्य 2.00 रुपया

पृष्ठ 4

कुमाऊँ वि.वि. के 19वें दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल ने उपाधियां प्रदान की

नैनीताल (शिक्षा का अधिकार)। कुमाऊँ विश्वविद्यालय का 19वां दीक्षान्त समारोह सोमवार को डीएसबी परिसर, नैनीताल में आयोजित किया गया। जिसमें 89 विद्यार्थियों (63 प्रतिशत छात्राओं) को उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए पदक, जबकि 201 पीएचडी शोधार्थी (66 प्रतिशत छात्राओं) और 19,570 स्नातक/स्नातकोत्तर छात्रों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक एवं उपाधि दी गई। जबकि कला-रंगमंच के क्षेत्र में राज्य का नाम राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करने वाले अभिनेता ललित मोहन तिवारी को डी-लिट और शिक्षा शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रोफेसर डीपी सिंह को डीएससी मानद उपाधि से विभूषित किया गया।

19वें दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि कुलाधिपति/राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि), उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत, कुलपति प्रोफेसर दीवान सिंह रावत आदि ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। जबकि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों, शोधार्थियों को बधाई संदेश देते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

डीएसबी परिसर के एएन सभागार में आयोजित 19वां दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने सभी उपाधि धारकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि उपाधि प्राप्त कर रहे और उनकी सफलता में योगदान देने वाले परिजन और गुरुजनों का परिश्रम है। समारोह केवल डिग्रियों का वितरण नहीं बल्कि यह शिक्षा के प्रति और भविष्य



का नया पड़ाव है।

यह वह क्षण है, जब आपके भीतर एक नया दृष्टिकोण विकसित होता है। यह अवसर आपके ज्ञान को आपके जीवन, समाज, और राष्ट्र के विकास में योगदान देने की शक्ति प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी भारत को विकसित राष्ट्र, नये आयामों और भारत को विश्व गुरु बनाने के लक्ष्य को लेकर आगे चल रहा है जो हमारे लिए गर्व की बात है।

राज्यपाल ने कहा कि कुमाऊँ विवि नवाचारों, अनुसंधान और समाजोपयोगी पहलों के कारण भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुका है। साथ ही सरकार द्वारा भी शिक्षकों और छात्रों को अनुसंधान के लिए आंतरिक शोध वित्त पोषण के तहत योग्य शिक्षकों को शोध

कार्य हेतु आर्थिक सहायता, छात्रों में शिक्षकों को उनके नवाचारों को पेटेंट कराने में सहायता प्रदान करने के लिए पेटेंट सेल की स्थापना, सेमिनार वित्त पोषण के तहत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने सभी उपाधि धारकों को बधाई देते हुए कहा कि आज के इस युग में शिक्षा नीति में कई राज्यों ने कई बेहतर कदम उठाए हैं। जिससे आज 21 वीं सदी के अनुरूप हमारी शिक्षा व्यवस्था और विकसित भारत को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उन्होंने बताया कि शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पीएम उषा के अंतर्गत कुमाऊँ विवि को मल्टी डिसेप्लिनरी एजुकेशन एवं रिसर्च यूनिवर्सिटीज (मेरु)

के रूप में 100 करोड़ का अनुदान प्राप्त हुआ है। जो विवि के लिए नहीं बल्कि राज्य के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। साथ ही उन्होंने बताया कि राज्य की संस्कृति-विरासत को संजोए रखने के लिए प्राइमरी स्कूलों में कुमाऊँ-गढ़वाली, जौनसारी आदि ऐसी बोलियाँ भी पठन पाठन में लागू की गई है। जिससे पहाड़ी भाषा-बोलियों का संरक्षण भी किया जा सके।

कुलपति प्रोफेसर दीवान सिंह रावत ने विवि के उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष कुमाऊँ विवि देश का पहला ऐसा संस्थान है जिसने परीक्षा सामग्री को गोपनीय छपाई के लिए एक पारदर्शी और वित्तीय रूप से मितव्ययी ओपन टेंडर प्रक्रिया लागू की। साथ ही इसी वर्ष विवि ने नेशनल

इंस्टिट्यूशन रैंकिंग फ्रेमवर्क में प्रतिष्ठित 51-100 श्रेणी में स्थान प्राप्त किया, जबकि फार्मसी विभाग ने राष्ट्रीय स्तर पर 62वां स्थान हासिल कर अपनी उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया।

विवि में एक मजबूत शोध संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए एक आंतरिक शोध निधि की स्थापना की गई, जिसमें 65 शिक्षकों को 1.25 करोड़ का वित्तीय अनुदान और टैलेंट हंट नामक एक विशेष वित्तीय सहायता कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसका वार्षिक बजट 30 लाख रुपए है। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर दिव्या जोशी उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर विधायक सरिता आर्य, डीएम वंदना सिंह, एसएसपी पी. एन. मीना सहित विद्यार्थी और गुरुजनों मौजूद रहे।

लोक संस्कृति दिवस के रूप में मनाया गया स्व. इंद्रमणि बड़ोनी का जन्म दिन



हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार)। भेल सेक्टर-2 स्थित सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज में स्व. इंद्रमणि बड़ोनी के जन्मदिन के अवसर पर लोक संस्कृति दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य प्रवीण कुमार ने मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर तथा इंद्रमणि बड़ोनी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य मनीष शर्मा ने किया।

मनीष शर्मा ने गढ़वाली भाषा में इंद्रमणि बड़ोनी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 24 दिसम्बर 1925 को टिहरी गढ़वाल की रियासत के अखोड़ी गांव में

जन्मे इंद्रमणि बड़ोनी को उत्तराखंड के गांधी के रूप में जाना जाता है। बड़ोनी अलग उत्तराखंड राज्य के लिए गहराई से प्रतिबद्ध थे।

वह 1979 से एक अलग राज्य के लिए आंदोलन में सक्रिय थे और पर्वतीय विकास परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे। 1994 में बड़ोनी ने अलग उत्तराखंड राज्य की मांग के लिए पौड़ी में आमरण अनशन शुरू किया। अंततः उन्हें सरकार द्वारा मुजफ्फरनगर जेल में डाल दिया गया। उत्तराखंड आंदोलन ने कई मोड़ लिए, लेकिन बड़ोनी ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई और विभिन्न गुटों और खेमों में बंटे

आंदोलनकारियों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। अहिंसक आंदोलन में उनके अटूट विश्वास और उनके करिश्माई लेकिन सहज व्यक्तित्व के कारण, द वाशिंगटन पोस्ट ने बड़ोनी को माउंटेन गांधी के रूप में संदर्भित किया। 18 अगस्त 1999 को ऋषिकेश के विठ्ठल आश्रम में उनका निधन हो गया। जीवन भर चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, बड़ोनी उत्तराखंड के इतिहास में एक सम्मानित और प्रभावशाली व्यक्ति बने हुए हैं। आचार्य तिग्मांशु बड़ोनी ने भी इंद्रमणि बड़ोनी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस दौरान आचार्या प्रतिभा जोशी ने कुमाऊँ भाषा में कविता प्रस्तुत की।

मुख्य शिक्षा अधिकारी रिश्त के मामले में न्यायालय से दण्डित

देहरादून (शिक्षा का अधिकार)। रिश्त के मामले में न्यायालय ने मुख्य शिक्षा अधिकारी को दण्डित किया है। शिकायतकर्ता रिजवानुर्रहमान पुत्र स्व0 मौलाना मतलुबुर्हमान निवासी मौहल्ला नियाजगंज अल्मोड़ा ने सतर्कता अधिष्ठान कार्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) में 25 अप्रैल 2017 को एक शिकायती प्रार्थनापत्र अशोक कुमार सिंह पुत्र इन्द्रदेव सिंह निवासी ग्राम दोलतिया पो0 बनकट जिला वाराणसी (उ0प्र0) तत्समय-मुख्य शिक्षा अधिकारी, अल्मोड़ा के द्वारा शिकायतकर्ता के मोहल्ला नियाजगंज अल्मोड़ा में स्थित फैजे आम सिटी मॉडर्न जूनियर हाईस्कूल की मान्यता के लिये मुख्य शिक्षा अधिकारी अल्मोड़ा के द्वारा 15000/रुपये रिश्त की मांग की जा रही है। जांच में तथ्य सही पाये जाने पर निरीक्षक पंकज उप्पेती के नेतृत्व में ट्रेप टीम का गठन किया गया। ट्रेप टीम द्वारा 28 अप्रैल 2017 को तत्कालीन मुख्य शिक्षा अधिकारी, अल्मोड़ा अशोक कुमार सिंह को 15,000 रुपया रिश्त लेते हुये स्वतंत्र साक्षियों के समक्ष रो हाथों गिरफ्तार किया गया तथा उत्कोच में लिये गये 15,000 रुपये अशोक कुमार सिंह उपरोक्त से मौके पर ही बरामद किये गये। इस सम्बन्ध में थाना सतर्कता अधिष्ठान, सेक्टर नैनीताल हल्द्वानी में अशोक कुमार सिंह के खिलाफ अभियोग पंजीकृत किया गया। अभियोग की विवेचना निरीक्षक संजय कुमार पाण्डे द्वारा की गयी तथा विवेचना उपरान्त अभियुक्त के

विरुद्ध आरोप पत्र न्यायालय प्रेषित किया गया। अभियोजन की कार्यवाही के दौरान अभियोजन अधिकारी दीना रानी द्वारा न्यायालय के समक्ष 13 गवाहों को परीक्षित कराया गया। अभियोग की पैरवी मुख्य आरक्षी सतपाल राम चिन्याल द्वारा की गयी। अभियोग की केस ऑफिसर निरीक्षक ललिता पाण्डे थी। न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, प्रथम/विशेष न्यायाधीश, भ्रष्टाचार निवारण हल्द्वानी नैनीताल नीलम रात्रा को अदालत द्वारा 23 दिसंबर 2024 को अभियुक्त अशोक कुमार सिंह को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 7 के अपराध के लिये तीन वर्ष के कठोर कारावास तथा 25,000 रुपया (पच्चीस हजार रुपये) के जुर्माने से दण्डित किया गया है तथा जुर्माना अदा न किये जाने की स्थिति में अभियुक्त को छः माह के अतिरिक्त साधारण कारावास से तथा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 13 (2) सपटित धारा 13 (1) (डी) के अपराध के लिये तीन वर्ष के कठोर कारावास तथा 25,000/रुपये (पच्चीस हजार रुपये) जुर्माने से दण्डित किया गया है तथा जुर्माना अदा न किये जाने की स्थिति में अभियुक्त को छः माह के अतिरिक्त साधारण कारावास से दण्डित किया गया है। निदेशक, उत्तराखण्ड सतर्कता अधिष्ठान, निदेशालय देहरादून, डॉ0 वी0मुरगेशन ने अपील की है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ आगे आये और टोल फ्री नम्बर-1064 पर कॉल करें।

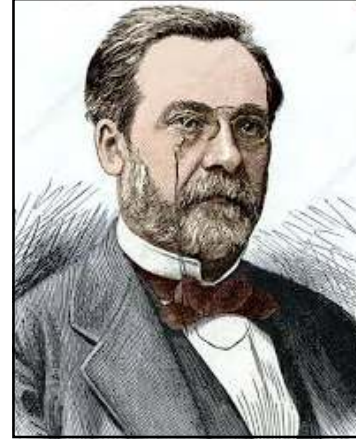
शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण

शिक्षा हमारे व्यक्तित्व के विकास में भी मदद करती है। यह हमें जिम्मेदार और नैतिक नागरिक बनने में मदद करती है। शिक्षा हमारे जीवन में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें ज्ञान, कौशल और समझ प्रदान करती है। यह हमें अपने आसपास की दुनिया को समझने और उसमें सफल होने में मदद करती है। शिक्षा हमें दुनिया के बारे में ज्ञान और समझ प्रदान करती है। यह हमें विभिन्न विषयों और मुद्दों के बारे में जानने में मदद करती है। शिक्षा हमें विभिन्न कौशल विकसित करने में मदद करती है। ये कौशल हमें अपने करियर में और अपने जीवन में सफल होने में मदद करते हैं। शिक्षा हमें आत्मविश्वास प्रदान करती है। यह हमें यह विश्वास दिलाता है कि हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं। शिक्षा हमें समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित करने में मदद करती है। यह हमें यह सिखाता है कि कैसे विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्याओं को देखें और उनका समाधान खोजें। शिक्षा हमें एक दूसरे को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। यह हमें विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के साथ सम्मान और समझ के साथ बातचीत करने में मदद करता है। हर व्यक्ति को शिक्षित होना इसलिए जरूरी है क्योंकि यह उन्हें अपने जीवन में सफल होने में मदद करता है। शिक्षा उन्हें एक बेहतर नौकरी पाने, अपने करियर में आगे बढ़ने और अपने समुदाय में योगदान देने में मदद करती है। पढ़ना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ने से हमें नए शब्दों और अवधारणाओं के बारे में जानने में मदद मिलती है। यह हमें विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के बारे में जानने में भी मदद करता है। शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है। हम हमेशा कुछ नया सीख सकते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन भर सीखते रहें। शिक्षा हमें ज्ञान और कौशल विकसित करने में मदद करती है। यह हमें विभिन्न विषयों और मुद्दों के बारे में जानने और विभिन्न कार्यों को करने में सक्षम बनाती है। शिक्षा समाज के विकास में भी योगदान देती है। यह हमें एक बेहतर समाज बनाने में मदद करती है। शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है जो हमारे जीवन को बेहतर बना सकता है। यह हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने, अपने करियर में सफल होने और अपने समाज में योगदान देने में मदद कर सकती है।

गुणवत्ता शिक्षा के लिए रणनीतियां

न केवल मानवीय जीव के लिए शिक्षा ग्रहण करना उसकी सफलता की कुंजी है बल्कि उसने संपूर्ण राष्ट्र के लिए भी विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसा माना जाएगा जैसे भारत को विज्ञान 2047 में हर व्यक्ति के शिक्षित होने से इस विज्ञान को एक महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा इसलिए ही केंद्र व राज्य सरकारों शिक्षा पर दो जोर दे रही है गुणवत्ता शिक्षा के लिए अनेक रणनीतियां बनाई जा रही है, इसी दिशा में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए शनिवार दिनांक 21 दिसंबर 2024 को भारत के गजट में 16 दिसंबर 2024 की अधिसूचना को प्रकाशित किया है, जिसमें अब नो डिटेन्शन पॉलिसी को समाप्त कर दिया गया है, जिसमें अब 5 वीं व 8 वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में फेल होने वाले विद्यार्थियों को अब पास नहीं किया जाएगा। हालांकि दो माह के अंदर दूसरी परीक्षा ली जाएगी, परंतु अगर उसमें भी वह फेल हो जाता है तो उसे उसी कक्षा में रोक दिया जाएगा परंतु निष्कासित नहीं किया जा सकता। हालांकि 2019 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम में संशोधन के बाद 16 राज्यों ने पहले से ही फेल नहीं करने की नीति को समाप्त कर दिया था, क्योंकि शिक्षा यह राज्य का विषय है परंतु अब केंद्र सरकार ने भी अधिसूचना जारी कर फेल को फेल ही रहने देने की अधिसूचना जारी कर दी है। लूक बच्चों को गुणवत्ता शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में बड़ी पहल है शिक्षक वह अभिभावक पढ़ाई में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन करेंगे, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय का शिक्षा के स्तर में सुधारो की दिशा में बड़ा कदम, अब 5 वीं से 8 वीं की वार्षिक परीक्षा में फेल विद्यार्थी फेल ही रहेंगे। 21 दिसंबर 2024 को जारी केंद्रीय गजट में अधिसूचना की करें तो, अब पांचवीं और आठवीं क्लास की परीक्षा में फेल होनेवाले विद्यार्थियों को अगली कक्षा में प्रमोट नहीं किया जाएगा। सरकार ने निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 में संशोधन किया है सरकार ने नो डिटेन्शन पॉलिसी खत्म कर दी है केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने आज, 21 दिसंबर 2024 को बड़ा फैसला करते हुए नो डिटेन्शन पॉलिसी को खत्म कर दिया। अब कक्षा 5 वीं और 8 वीं की वार्षिक परीक्षा में फेल होने वाले छात्रों को पास नहीं किया जाएगा। पहले फेल होने वाले छात्रों को पास कर अगली कक्षा में प्रमोट कर दिया जाता था, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। फेल होने वाले छात्रों को दो महीने के अंदर दोबारा परीक्षा देने का मौका मिलेगा। अगर कोई छात्र दोबारा फेल होता है तो उसे प्रमोट नहीं किया जाएगा। जारी अधिसूचना में कहा गया है कि बच्चे को रोक रखने के दौरान शिक्षक बच्चे के साथ-साथ यदि आवश्यक हो तो अभिभावक का भी मार्गदर्शन करेंगे। वहीं केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने तक किसी भी बच्चे को किसी भी स्कूल से नहीं निकाला जाएगा शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार यह नियम केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों और सैनिक स्कूलों सहित केंद्र सरकार द्वारा संचालित 3 हजार से अधिक स्कूलों पर लागू होगा। वहीं मंत्रालय के मुताबिक स्कूलों शिक्षा राज्य का विषय है, इसलिए राज्य इस संबंध में अपना निर्णय ले सकते हैं। पहले ही 16 राज्यों और दिल्ली सहित 2 केंद्र शासित प्रदेशों ने इन दो कक्षाओं के लिए नो-डिटेन्शन पॉलिसी को पहले ही खत्म कर दिया है। एक गजट अधिसूचना के अनुसार, नियमित परीक्षा के आयोजन के बाद, यदि कोई बच्चा समय-समय पर अधिसूचित पदोन्नति मानदंडों को पूरा करने में विफल रहता है, तो उसे दो महीने की अवधि के भीतर अतिरिक्त निर्देश और पुनः परीक्षा का अवसर दिया जाएगा अधिसूचना में कहा गया है, यदि पुनः परीक्षा में बच्चे वाला बच्चा फिर से पदोन्नति के मानदंडों को पूरा करने में विफल रहता है, तो उसे पांचवीं कक्षा या आठवीं कक्षा में रोक दिया जाएगा, जैसा भी मामला हो। बच्चे को रोक रखने के दौरान, कक्षा शिक्षक बच्चे के साथ-साथ यदि आवश्यक हो तो बच्चे के माता-पिता का मार्गदर्शन करेंगे और मूल्यांकन के विभिन्न चरणों में सीखने के अंतराल की पहचान करने के बाद विशेष जानकारी प्रदान करेंगे।

महान फ्रांसीसी रसायनज्ञ-लुई पाश्चर



लुई पाश्चर का जन्म 27 दिसंबर, 1822, डोल, फ्रांस - एक फ्रांसीसी रसायनज्ञ और सूक्ष्म जीवविज्ञानी थे, जो चिकित्सा सूक्ष्म जीव विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण संस्थापकों में से एक थे। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा में पाश्चर का योगदान लगभग बेजोड़ है। उन्होंने आणविक विषमता के अध्ययन का बीड़ा उठाया; पाया कि सूक्ष्मजीव किण्वन और बीमारी का कारण बनते हैं; पाश्चरिजेशन की प्रक्रिया शुरू की; फ्रांस में बीयर, शराब और रेशम उद्योगों को बचाया; और एंथ्रेक्स और रेबीज के खिलाफ टीके विकसित किए। (1822-1895) स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में अपने अनुयायियों और आम जनता द्वारा अत्यधिक सम्मानित हैं। वास्तव में, उनके नाम ने एक घरेलू शब्द - पाश्चरिजेशन के लिए आधार प्रदान किया। उनके शोध, जिसने दिखाया कि सूक्ष्मजीव किण्वन और बीमारी दोनों का कारण बनते हैं, ने रोग के रोगाणु सिद्धांत का समर्थन किया, उस समय जब इसकी वैधता पर अभी भी सवाल उठाए जा रहे थे। रोगों को टीक करने की अपनी निरंतर खोज में, उन्होंने मुर्गी हैजा के लिए पहला टीका बनाया; एंथ्रेक्स, एक प्रमुख पशुधन रोग है हाल ही में मनुष्यों के खिलाफ रोगाणु युद्ध में इस्तेमाल किया गया है; और खतरनाक रेबीज। प्रारंभिक जीवन और शिक्षा पाश्चर का जन्म फ्रांस के डोल में हुआ था। वे एक चर्मकार परिवार में पाँच बच्चों में से मझले थे जो पीढ़ियों से वहाँ रहते थे। हाई स्कूल के अंत तक युवा पाश्चर की प्रतिभा अकादमिक से ज्यादा कलात्मक दिखाई देने लगी थी। अपने गुरुओं के प्रोत्साहन से प्रेरित होकर, उन्होंने पेरिस के प्रतिष्ठित शिक्षक महाविद्यालय, इकोले नॉर्मले सुपीरियर की तैयारी के लिए अपनी अकादमिक कमियों को सुधारने के लिए एक कठोर पाठ्यक्रम लिया। उन्होंने 1845 में वहाँ से मास्टर डिग्री और 1847 में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। दृश्य कार्य अध्ययन सही समय का इंतज़ार करते हुए, पाश्चर ने इकोले नॉर्मले में प्रयोगशाला सहायक के रूप में काम करना जारी रखा। वहाँ उन्होंने अपने डॉक्टरेट शोध प्रबंध के लिए शुरू किए गए शोध पर आगे की प्रगति को - कुछ कणों या समाधानों की समतल-बिखरे हुए प्रकाश को दक्षिणावर्त या वामावर्त घुमाने की क्षमता की जांच करना, यानी ऑप्टिकल गतिविधि प्रदर्शित करना। वह यह दिखाने में सक्षम था कि कई मामलों में यह कार्य यौगिक के क्रिस्टल के आकार से संबंधित है। उन्होंने यह भी दिखाया कि ऐसे प्रकाश-विसरित यौगिकों में अणुओं की एक विशेष आंतरिक व्यवस्था होती है - एक असममित व्यवस्था। इस सिद्धांत का संरचनात्मक रसायन विज्ञान के प्रारंभिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है - रसायन विज्ञान का वह क्षेत्र जो अणुओं के त्रि-आयामी गुणों का अध्ययन करता है। किण्वन और पाश्चरिकरण लुई पाश्चर अपनी प्रयोगशाला में एक जार में रेबीज से संक्रमित खरगोश की रीढ़ रखते हैं, जिसका उपयोग उन्होंने इस बीमारी के लिए एक टीका बनाने के लिए किया था। लुई पाश्चर अपनी प्रयोगशाला में एक जार में रेबीज से संक्रमित खरगोश की रीढ़ रखते हैं, जिसका उपयोग उन्होंने इस बीमारी के लिए एक टीका बनाने के लिए किया था। विज्ञान इतिहास केंद्र/ग्रेगरी टोबियास पाश्चर ने इस विषय पर वैज्ञानिक पत्रों और संबंधित शोध के माध्यम से अपनी अकादमिक साख अर्जित की और फिर 1848 में स्ट्रासबर्ग में विज्ञान संकाय और 1854 में लिली में संकाय में नियुक्त हुए। वहाँ उन्होंने अपने किण्वन अध्ययन प्रस्तुत किए। पाश्चर अपने समकालीनों के एक अल्पसंख्यक के दृष्टिकोण से सहमत थे कि हर प्रकार का किण्वन एक जीवित जीव द्वारा किया जाता है। उस समय, अधिकांश लोगों का मानना था कि किण्वन रासायनिक प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला से विकसित हुआ है जिसमें एंजाइम - जो स्वयं अभी तक जीवन से सुरक्षित रूप से जुड़े नहीं थे - ने प्रमुख भूमिका निभाई। 1857 में पाश्चर वैज्ञानिक अध्ययनों के निदेशक के रूप में इकोले नॉर्मले में लौट आए। वहाँ स्थापित की गई मामूली प्रयोगशाला में, उन्होंने किण्वन का अध्ययन जारी रखा और आत्म-जिम्मेदारी के सिद्धांत के खिलाफ लंबे समय तक और कड़ी लड़ाई लड़ी। इन बहसों के शुरुआती चरणों में सबसे प्रमुख उनकी किण्वन प्रक्रिया के विभिन्न अनुप्रयोग थे, जिन्हें उन्होंने शराब की बीमारियों से निपटने

के लिए शुरू में विकसित और पेटेंट कराया था (1865 में)। उन्होंने महसूस किया कि ये अवांछित बैक्टीरिया के कारण होते हैं जिन्हें शराब को 60ए और 100ए के बीच के तापमान पर गर्म करके नष्ट किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को बाद में दूध जैसे सभी प्रकार के अन्य खराब होने वाले सामानों पर लागू किया गया। जिस समय पाश्चर ने किण्वन का अध्ययन शुरू किया, उसी समय उन्होंने बीमारी के कारण के बारे में भी एक संबंधित दृष्टिकोण अपनाया। उनका और कई अन्य वैज्ञानिकों का मानना था कि बीमारियाँ सूक्ष्मजीवों की गतिविधियों के कारण होती हैं - रोगाणु सिद्धांत। विरोधियों का मानना था कि बीमारियाँ, विशेष रूप से बड़ी बीमारियाँ, सबसे पहले पीड़ित की आंतरिक स्थिति और गुणवत्ता में कमजोरी या असंतुलन से उत्पन्न होती हैं। 1860 के दशक में, कुछ बीमारियों के कारणों की अपनी जांच के आरंभ में, पाश्चर रेशम के कीड़ों को होने वाले विनाशकारी नुकसान के कारण की पहचान करने में सफल रहे, जो उस समय के महत्वपूर्ण फ्रांसीसी रेशम उद्योग का आधार थे। आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने पाया कि एक नहीं बल्कि दो सूक्ष्मजीव इसके लिए जिम्मेदार थे। हालांकि, पाश्चर 1870 के दशक के अंत तक बीमारियों के अध्ययन में पूरी तरह से शामिल नहीं हुए, जब विनाशकारी परिवर्तनों की एक श्रृंखला ने उनके जीवन और फ्रांसीसी राष्ट्र को हिलाकर रख दिया। 1868 में, रेशम के कीड़ों का अध्ययन करते समय, उन्हें एक आघात लगा जिससे उनके शरीर का बायाँ हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। शरीर है। इसके तुरंत बाद, 1870 में, फ्रांस को प्रशिया ने अपमानजनक रूप से हराया। क्रांति पराजित हुई और सम्राट लुई-नेपोलियन को पदच्युत कर दिया गया। हालांकि, पाश्चर ने एक नई सरकार खोलने के लिए राज्यपाल के साथ सफलतापूर्वक बातचीत की। सरकार ने उन्हें मुक्त करने के लिए एक नई प्रयोगशाला बनाने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने प्रशासनिक और शिक्षण कर्तव्यों से मुक्त होने और बीमारी का अध्ययन करने के लिए अपनी ऊर्जा को मुक्त करने के लिए पेंशन और विशेष मुआवजे का अनुरोध किया। टीका-प्रतिरोधी वायरस-मुर्गी हैजा और एंथ्रेक्स बीमारी के खिलाफ अपने शोध अभियान में, पाश्चर ने शुरू में एंथ्रेक्स के बारे में जो कुछ भी जाना था, उसका विस्तार करने पर काम किया, लेकिन जल्द ही उनका ध्यान मुर्गी हैजा की ओर चला गया। इस जांच के परिणामस्वरूप, उन्होंने वायरस को कम करके या कमजोर करके वैक्सीन बनाने का तरीका खोजा। पाश्चर अक्सर प्रयोगशाला में अध्ययन किए जा रहे कल्चर को हर कुछ दिनों में ताजा करते थे - इस मामले में, मुर्गी हैजा; यानी, उन्होंने उन्हें प्रयोगशाला के मुर्गियों के दिमाग में फिर से डाला, और इसका नतीजा यह हुआ कि पक्षियों को बीमारी हो गई और वे मर गए। विज्ञान इतिहास केंद्र/ग्रेगरी टोबियास महीनों के प्रयोगों के दौरान, पाश्चर ने मुर्गियों में हैजा के कल्चर को निष्क्रिय रहने दिया, जबकि वे स्वयं छुट्टी पर चले गए। जब वे वापस लौटे और उसी प्रक्रिया को दोहराया, तो मुर्गियाँ पहले की तरह बीमार नहीं हुईं। पाश्चर आसानी से जान सकते थे कि कल्चर मर चुका है और उसे पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता, लेकिन इसके बजाय उन्हें प्रयोगात्मक मुर्गियों में खतरनाक कल्चर का टीका लगाने का प्रलोभन दिया गया। आश्चर्यजनक रूप से, मुर्गियाँ बच गईं और बीमार नहीं हुईं; वे समय के साथ कमजोर वायरस से सुरक्षित हो गईं। यह महसूस करते हुए कि उन्हें एक ऐसी विधि मिल गई है जिसे अन्य बीमारियों पर भी लागू किया जा सकता है, पाश्चर एंथ्रेक्स के

अपने अध्ययन पर लौट आए। पाश्चर ने कमजोर एंथ्रेक्स बेसिली से ऐसे टीके बनाए जो भेड़ों और अन्य जानवरों की प्रभावी रूप से रक्षा कर सकते थे। 5 मई, 1881 को और फिर मई में, पौली-ले-फोर्ट में सार्वजनिक प्रदर्शनों में, चौबीस भेड़ों, एक बकरी और छह गायों को दर्शकों की भीड़ के सामने नए टीके का दो-भाग का टीका लगाया गया। 17. चौबीस भेड़, एक बकरी और चार मवेशियों के एक नियंत्रण समूह को टीका नहीं लगाया गया था। 31 मई को, सभी जानवरों को घातक एंथ्रेक्स बैक्टीरिया का इंजेक्शन लगाया गया और दो दिन बाद, 2 जून को, भीड़ फिर से इकट्ठा हुई। पाश्चर और उनके सहयोगियों ने जोरदार तालियों के साथ पहुँचे। टीके की प्रभावशीलता निर्विवाद थी- सभी टीका लगाए गए जानवर बच गए। नियंत्रण जानवरों में से, तीन को छोड़कर सभी भेड़ें थीं, जो दिन के अंत तक मर गईं और चार असुरक्षित गायें सूज गईं और बुखार से पीड़ित थीं। एक बकरी भी मर गई। रेबीज और इंटीट्यूट पाश्चर की शुरुआत इसके बाद पाश्चर ने मानव रोग के अधिक कठिन क्षेत्र में जाने का प्रयास किया, जहाँ नैतिक चिंताएँ और भी अधिक थीं। उन्होंने एक ऐसी बीमारी पर ध्यान केंद्रित किया जो जानवरों और मनुष्यों दोनों को प्रभावित करती थी, इसलिए उनके अधिकांश प्रयोग जानवरों पर किए गए, हालाँकि यहाँ भी उन्हें सख्त संदेह का सामना करना पड़ा। रेबीज, एक पसंदीदा बीमारी, ने लंबे समय से कई लोगों को डरा दिया था, हालाँकि यह वास्तव में मनुष्यों में दुर्लभ थी। पाश्चर के टीकाकरण के समय तक, पागल जानवर के काटने पर सामान्य उपचार लाल-गर्म लोहे से दागना था, ताकि बीमारी के अज्ञात कारण को नष्ट किया जा सके, जो हमेशा एक लंबी ऊष्मायन अवधि के बाद दिखाई देता था। रेबीज ने एक सफल वैक्सीन के विकास में नई बाधाएँ पेश कीं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि बीमारी पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव को सीधे पहचान नहीं की जा सकती थी; और इसे इन विट्रो (प्रयोगशाला में, जानवर में नहीं) में विकसित नहीं किया जा सकता था। अन्य प्रक्रामक रोगों की तरह, रेबीज को अन्य प्रजातियों में भी प्रसारित किया जा सकता है और कम किया जा सकता है। रेबीज में कमी सबसे पहले बंदरों और बाद में खरगोशों में पाई गई। 16 जुलाई 1885 को कुत्तों को बचाने में सफलता का अनुभव करने के बाद, यहाँ तक कि उन कुत्तों को भी जिन्हें पहले ही किसी पागल जानवर ने काट लिया था, पाश्चर ने कुछ हिचकिचाहट के साथ अपने पहले मानव रोगी, नौ वर्षीय जोसेफ मोस्टर का इलाज करने के लिए सहमति व्यक्त की, जिसे अन्यथा एक पागल जानवर ने काट लिया था, जिसकी निश्चित मृत्यु हो सकती थी। इस मामले और हजारों अन्य मामलों में सफलता ने दुनिया भर के एक आभारी समुदाय को इंस्टीट्यूट पाश्चर को दान करने के लिए प्रेरित किया। इसे आधिकारिक तौर पर 1888 में खोला गया था और यह बायोमैडिकल अनुसंधान के लिए दुनिया के अग्रणी केंद्रों में से एक है। टीकों की खोज और उत्पादन की इसकी परंपरा आज भी दवा कंपनी सैनोफी पाश्चर द्वारा जारी है। पाश्चर के काम से पता चलता है कि वह एक महान प्रयोगकर्ता थे, जो बीमारी के सिद्धांत और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया से कम चिंतित थे और नए टीके विकसित करके बीमारियों को सीधे संबोधित करने में अधिक रुचि रखते थे। हालाँकि, इन विषयों पर उनके विचारों को देखना संभव है। यह स्पष्ट है। उन्होंने शुरू में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को शामिल सूक्ष्म जीव के वैज्ञानिक, विशेष रूप से पोषण संबंधी आवश्यकताओं से जोड़ा; यानी, लंबे समय तक कमजोर किया गया सूक्ष्म जीव ने अपने शुरुआती हमले के दौरान अपने भोजन के स्रोत को समाप्त कर दिया है, जिससे सूक्ष्म जीव के लिए बाद के हमले मुश्किल हो जाते हैं। बाद में उन्होंने परिकल्पना की कि बैक्टीरिया विषाक्त साधन उत्पन्न कर सकते हैं जो पूरे शरीर में घूमते हैं, इस प्रकार टीकों में विषाक्त पदार्थों और एंटीबॉक्सिन के उपयोग का सुझाव देते हैं। उन्होंने एली मेटचनिक के सिद्धांत को अपनाकर एक और दृष्टिकोण भी प्रस्तावित किया इंस्टीट्यूट पाश्चर और प्रतिरक्षा प्रणाली के विकास पर उनके काम से। उन्होंने साबित किया कि फागोसाइटोसिस - रक्त में सफेद कणिकाएँ - शरीर से विदेशी पदार्थों को साफ करती हैं और प्रतिरक्षा का प्राथमिक साधन हैं। 128 सितंबर, 1895 को पाश्चर का स्टैंट-क्लाउड में निधन हो गया लेकिन रेबीज के क्षेत्र में उनका महान योगदान हमेशा याद रखा जाएगा।

उदयन शालिनी फैलोशिप ने कार्यशाला में छात्राओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दी

देहरादून (शिक्षा का अधिकार) । उदयन केयर संस्था बालिकाओं की शिक्षा के साथ ही उनके सर्वांगीण विकास के क्षेत्र में कार्य कर रही है। उदयन संस्था द्वारा आज छात्राओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में दंत चिकित्सा एवं आयुर्वेद चिकित्सा के विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागी छात्राओं को स्वस्थ जीवनशैली एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारी दी गई।

इस अवसर पर वरिष्ठ दंत चिकित्सक डॉ. निषिद्ध गैरोला ने प्रतिभागियों को दांतों की विभिन्न बीमारियों एवं समस्याओं की विस्तार से जानकारी दी तथा साथ ही इन समस्याओं से बचाव एवं उनके निदान के तरीके बताए।

डॉ. दीप्ति पांडे ने छात्राओं को महिलाओं से संबंधित समस्याओं एवं रोगों के बारे में जानकारी देते हुए आयुर्वेदिक तरीके से उनके निवारण के उपाय बताए। शल्य चिकित्सक डॉ. जितेन्द्र पांडे ने छात्राओं को आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति



पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न रोगों से लड़ने एवं बचाव हेतु जानकारी प्रदान की।

उदयन शालिनी देहरादून चैप्टर के संयोजक विमल डबराल ने बताया कि

छात्राओं के सर्वांगीण विकास के क्रम में उन्हें स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने एवं जागरूकता लाने के उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम में उदयन केयर की कोर कमेटी सदस्य सुमन तिवारी, उत्तर भारत प्रबंधक वरुणा, को-आर्डिनेटर फरहा के साथ ही खुशी शर्मा, पूजा, शिवानी,

फरहीन, अंजलि निधि धीमान आदि छात्राओं एवं उनके अभिभावकों सहित लगभग दो सौ प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

सांसद महेंद्र भट्ट ने स्कूलों में अनिवार्य कानूनी शिक्षा व आत्मरक्षा प्रशिक्षण का मुद्दा सदन में उठाया

देहरादून (शिक्षा का अधिकार) । राज्यसभा सांसद और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने स्कूलों में अनिवार्य कानूनी शिक्षा और आत्म रक्षा प्रशिक्षण का मुद्दा सदन में उठाया है। साथ ही वित्त मंत्रालय से मातृ शक्ति हित में सुकन्या समृद्धि योजना की विस्तृत जानकारी भी मांगी। उन्होंने प्रश्नकाल के दौरान अतारांकित प्रश्न संख्या 2606 में सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा गया कि क्या सरकार स्कूली पाठ्यक्रम में कानूनी शिक्षा और आत्म-रक्षा प्रशिक्षण सम्मिलित करने पर विचार करेगी। जिसके जबाब में शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री जयन्त चौधरी की तरफ स्पष्ट किया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में छात्रों की सुरक्षा और संरक्षा तथा कानूनी प्रावधानों को समग्र रूप से शामिल किया गया है। जिसके तहत कक्षा 11 और 12 में अंतःविषयक क्षेत्र के रूप में कानूनी अध्ययन शामिल है।



वहीं इस बात पर बल दिया गया है कि सभी संसाधन व्यक्तियों, मास्टर प्रशिक्षकों के साथ-साथ अन्य कर्मचारियों को छात्रों की सुरक्षा से संबंधित कानूनी प्रावधानों के बारे में संवेदनशील और जागरूक होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, एनसीईआरटी ने प्लाटफॉर्म विकासक हेतु कानूनी साक्षरता पुस्तिका और ग्रेड 6 से 12 के लिए निम्न मॉड्यूल तैयार किए गए हैं भारतीय साक्ष्य अधिनियम-2023, भारतीय न्याय संहिता-2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 को सम्मिलित किया गया है। आत्मरक्षा प्रशिक्षण के सवाल पर शिक्षा मंत्रालय ने कहा कि एनसीईएफ-एसई, 2023

अधिनियम संबंधी जागरूकता, लड़कियों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण का महत्व और साथ ही साइबर अपराध और डिजिटल दुरुपयोग अभिन्न घटक हैं ताकि जागरूकता पैदा की जा सके एवं सुरक्षा और यौन शोषण के निवारण के महत्व के बारे में विभिन्न हितधारकों को संवेदनशील बनाया जा सके।

एनसीईआरटी ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन भी किया है, जिसमें अध्ययन के लिए 30 राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों के 254 कार्यात्मक केजीबीवी को लिया गया था। निष्कर्षों से पता चलता है कि 207 केजीबीवी में लड़कियों को मार्शल आर्ट और आत्मरक्षा तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया तथा उन्हें कानूनी अधिकारों के बारे में भी जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त श्री भट्ट द्वारा राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न संख्या 2490 के तहत मातृ शक्ति हित में सुकन्या समृद्धि योजना की जानकारी मांगी गई। जिसमें उन्होंने पूछा, सुकन्या समृद्धि योजना के अंतर्गत बालिकाओं के कितने खाते खोले गए हैं और क्या सरकार ने उन राज्यों में इस योजना को बढ़ावा देने के लिए कोई पहल की है। साथ जहां इसकी प्रगति धीमी रही है, उसका तत्संबंधी व्यौरा भी मांगा? जिसके उत्तर में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने बताया कि 30 नवंबर 2024 की स्थिति के अनुसार सुकन्या समृद्धि खाता योजना के अंतर्गत बालिकाओं के खोले गए खातों की संख्या 4,10,29,011 है। एजेंसियों द्वारा जनता की जानकारी के लिए खाते खोलने के अभियान भी समय-समय पर शुरू किए जाते हैं।

मानकों को बच्चों तक पहुंचाना बेहद जरूरी: कुलदीप गैरोला



देहरादून (शिक्षा का अधिकार) । मानकों के माध्यम से विज्ञान सीखना कार्यशाला का शुभारंभ भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा देहरादून के एक होटल में आयोजित किया गया, जिसमें अपर निदेशक समग्र शिक्षा उत्तराखंड कुलदीप गैरोला ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। कार्यशाला में 80 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया, जो नैनीताल, उधमसिंह नगर, उत्तरकाशी, बागेश्वर, चम्पावत, बिजनौर और शामली क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों से थे। कार्यक्रम में श्री गैरोला ने कहा कि मानकों को बच्चों तक पहुंचाना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इस कार्य में शिक्षकों की भूमिका अहम है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला के माध्यम से शिक्षक स्कूलों में जाकर बच्चों को मानकों के महत्व और विज्ञान से जुड़ी जानकारी प्रदान करेंगे। उन्होंने भारतीय मानक ब्यूरो के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि यह कार्य देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है और इसके माध्यम से हम एक बेहतर भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। बीआईएस देहरादून शाखा के निदेशक व प्रमुख, सौरभ तिवारी ने कहा कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों तक मानकों में निहित विज्ञान का सार पहुंचाना है। उन्होंने बताया कि मानक बनाने की प्रक्रिया में बच्चों को भी शामिल किया जाना चाहिए और उनके सुझावों को भी माना जाना चाहिए, जिसके लिए स्कूलों में स्टैंडर्ड क्लब संचालित किए गए हैं। कार्यशाला में बीआईएस के वैज्ञानिक सचिन चौधरी, रिसोर्स पर्सन अनंत भास्कर और डॉ. मनीषा गर्ग ने बीआईएस और स्टैंडर्ड क्लब की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुतिकरण दिया और प्रतिभागियों को मानकों के माध्यम से विज्ञान सीखने के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला में शामिल सभी शिक्षकों को भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा तैयार किए गए 52 लेसन प्लान दिए गए, जिन्हें शिक्षक अपने विद्यालयों में बच्चों को मानकों के विषय में जानकारी देने के लिए उपयोग करेंगे।

धूमधाम से मनाया गया किडजी स्कूल का वार्षिकोत्सव

हरिद्वार (शिक्षा का अधिकार) । किडजी स्कूल कनखल का 8वां वार्षिकोत्सव बच्चों और उनके माता-पिता के साथ धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व राज्य मंत्री प्रोफेसर प्रेमचंद शास्त्री, स्कूल की प्रिंसिपल प्रियंका शर्मा, सौरभ सारस्वत, थाना कनखल के सब इंस्पेक्टर अनिल कुमार सोनी, नवीन चौहान ने दीप प्रज्वलित कर किया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रेस क्लब हरिद्वार के अध्यक्ष अमित कुमार शर्मा, जूी लर्न के क्षेत्र प्रबंधक अंकित शर्मा, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य ओमदत्त शर्मा, करतार सिंह, आरएसएस के उपनगर कार्यवाह मनोज पाल, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक दिल्ली पुलिस जयवीर सिंह, सामाजिक संस्था टीम बंधु के शुभम् धीमान, नीरज, अंकित शर्मा ने बच्चों को सांस्कृतिक दर्शन के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में बच्चों ने पर्यावरण, खेल कूद, पहाड़ी संस्कृति, नारी सशक्तिकरण पर बहुत सुंदर प्रस्तुति दी।

स्कूल की प्रिंसिपल प्रियंका शर्मा ने अपने उद्बोधन के माध्यम से सभी अभिभावकों का धन्यवाद स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन अनिता सिंह और मानसी इरी ने किया। स्कूल की टीचर्स रिंकी, प्रिया, संध्या, रेखा, हिमानी, युक्ति, जिज्ञासा, सहकर्मी, ब्रिजेश और सुमेश ने आयोजन में सहयोग दिया। शयाशी, खुशबू



और श्रेया ने गणेश वंदना की प्रस्तुति दी। कि शिवाय ने कश्मीर, लियान और अनंत ने गुजरात, आश्रिक ने असम, अथर्व और अदविका ने नागालैंड, अमीषा अग्रवाल ने महाराष्ट्र के दर्शन. रामायण गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। बम-बम भोले गीत पर बच्चों ने प्रिशा, समृद्ध, प्रणिका, रेयांश, मेधावी, क्रियांश, काशवी, शिवम, अंशिका, वीरांश, संस्कृति, विराट ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। जूबी डूबी गीत पर दिव्यांश, विहान,

शारवी, कनिष्क, वाणी, कनिष्क बिष्ट, हेतिका, श्रेष्ठा, ईशा, माधव, देवश्री, अदवित, अश्वी ने प्रस्तुति दी। भांगड़ा पर सीनियर केजी के बच्चों ने भाग लिया। सोशल मीडिया पर दिव्यांश ने सबको चेताया। सानवी, आरोही, अरवि, भव्या, स्वर्णा, अविशा, लवलीन ने नर्च से कदम गीत पर नृत्य किया। स्कूल की और माता-पिता को भी उनके बच्चों के प्रति योगदान पर पुरस्कृत किया गया। पेड़ बचाओ अभियान पर पार्थ, हृदय, प्रणीत, अयांश, नियंत, आद्रिक, अर्णव, रिशांक, संकल्प, धैर्य, राघव, वल्लभ, आर्षय, दिव्यांश ने प्रस्तुति दी। गढ़वाली गीत पर निर्वा, अनायरा, वैष्णवी, अक्षिता, श्रेयांशी, अद्रिका, रौनक, प्रिशा, दिशा ने भाग लिया। आयुषी, तनीषा, अरुनी, नवधा, सिमरन, मानवी ने महिला सशक्तिकरण पर सुंदर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के दौरान सामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए पत्रकार सचिन शर्मा, एसआई अनिल कुमार सोनी, महिला एसआई भावना, तक्षशिला इंटर कालेज के प्रधानाचार्य सूर्यप्रताप और उनकी पत्नी संगीता को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम में किडजी हरियावाला सीमा तिवारी, किडजी भानियावाला से सुमन पंवार, किडजी ऋषिकेश से सीमा कोठारी, किडजी शहास्त्रधारा रोड देहरादून से कनिका, ओमदत्त शर्मा, देवेन्द्र शर्मा, तरुण, वैभव, सौरभ जोशी, ओमकारी, माया शर्मा, विमलेश शर्मा, सीमा शर्मा और सोनिक शर्मा उपस्थित रहे।

राज्यपाल ने यूसर्क द्वारा आयोजित कॉन्क्लेव में विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला वैज्ञानिकों को किया सम्मानित

देहरादून(शिक्षा का अधिकार)। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने गुरुवार को उत्तराखण्ड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र (यूसर्क) द्वारा आईआरडीटी सभागार, देहरादून में आयोजित महिला वैज्ञानिक कॉन्क्लेव का शुभारंभ किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने विज्ञान एवं विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला वैज्ञानिकों को सम्मानित किया और उनके प्रयासों की सराहना की। इस दौरान "युवा महिला वैज्ञानिक उत्कृष्टता सम्मान-2024" से डॉ. प्रतिभा जोशी, कु. तनुजा आर्या, कु. बहार अंजुम, डॉ. दीप्ति रावत को और "युवा महिला वैज्ञानिक उपलब्धि सम्मान-2024" से डॉ. मीनाक्षी राणा, डॉ. अर्चना ध्यानी, कु. बिनु सिंह, डॉ. निर्जरा सिंघवी, डॉ. मनु पंत, डॉ. श्रद्धा बिष्ट, डॉ. नीतू पाण्डेय, डॉ. दिव्या सिंह एवं डॉ. पवनिका चन्दोला को सम्मानित किया गया। इसके अलावा 03 छात्राओं निहारिका नेगी, दृष्टि चौहान और श्रेया रौतेला को "विज्ञान चेतना छात्रा सम्मान" से सम्मानित किया। राज्यपाल ने सम्मानित होने वाली महिला वैज्ञानिकों और छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमारी बेटियां हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। उनकी उपलब्धियां प्रभावशाली और प्रेरणादायी हैं। उन्होंने कहा कि यह



कॉन्क्लेव टेक्नोलॉजी, महिला शक्ति, और युवा शक्ति का अद्भुत संगम है। इन तीनों के समन्वय से भारत विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है। राज्यपाल ने कहा कि वर्तमान समय में महिलाएं विज्ञान, तकनीकी, कौशल विकास, शिक्षा और

रोजगार जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और तकनीकी नवाचारों में महिलाओं और युवाओं को बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इस आयोजन को महिला वैज्ञानिकों को

सम्मानित और प्रोत्साहित करने का एक सराहनीय कदम बताते हुए कहा कि इससे बेटियों को विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में नई प्रेरणा मिलेगी। राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड की महिलाएं अपनी क्षमताओं और परिश्रम के

माध्यम से प्रदेश की आर्थिकी में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं स्वरोजगार को बढ़ावा देकर आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में नया अध्याय लिख रही हैं। राज्यपाल ने यूसर्क द्वारा आयोजित नवाचारी कार्यक्रमों और पर्यावरणीय वैज्ञानिक गतिविधियों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यूसर्क प्रदेश के युवाओं और महिलाओं को विज्ञान एवं तकनीकी के माध्यम से सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने वहां लगी प्रदर्शनी का अवलोकन कर छात्राओं से संवाद किया। इस कॉन्क्लेव में गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह चौहान और उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आंकार सिंह ने सभी महिला वैज्ञानिकों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए इस कॉन्क्लेव को उत्तराखण्ड में महिला शक्ति और विज्ञान के क्षेत्र में नवाचारों को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास बताया। यूसर्क की निदेशक प्रो. (डॉ) अनीता रावत ने अतिथियों का स्वागत करते हुए युवा महिला वैज्ञानिक कॉन्क्लेव के आयोजन संबंधी भूमिका के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश नोटियाल ने किया। कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षण संस्थानों के प्राचार्य एवं शिक्षक शिक्षिकाएं सहित अन्य लोगों ने प्रतिभाग किया।

छात्र जीवन में खेलों का है विशेष महत्व : वर्मा

हरिद्वार(शिक्षा का अधिकार)। छात्र जीवन में खेलों का विशेष महत्व है। इससे जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलती है। उक्त विचार भारत विकास परिषद की पंचपुरी शाखा के अध्यक्ष निखिल वर्मा ने जगजीतपुर स्थित महर्षि विद्या मंदिर स्कूल में वार्षिक खेलों का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किया। वर्मा ने कहा कि आज के दौर में बच्चों पर पढ़ाई का बोझ बढ़ रहा है। जिसका बच्चों पर कभी-कभी नकारात्मक प्रभाव हावी हो जाता है। उससे बाहर निकलने का सबसे सरल तरीका खेल है। इसीलिए बच्चों को अपनी



रूचि के अनुसार कोई भी खेल जरूर खेलना चाहिए। खेलों से उनका चहुमुंखी विकास होता है। महर्षि विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य राजीव त्यागी ने बताया कि इस बार के वार्षिक खेलों में बास्केट बॉल और एथलीट मुख्य आकर्षण का केंद्र है। जिसमें आयु वर्ग को बांट कर टीमें बनाई गई हैं। वार्षिक खेल 21 दिसम्बर को समाप्त होंगे। इस अवसर पर आभा वर्मा, कार्यवाहक सचिव कुशल श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष विश्वास सक्सेना और स्कूल का स्टाफ मौजूद रहा।

राज्य के पहले खेल विवि अध्यादेश को राजभवन की मंजूरी, पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बन सकेंगे कुलपति

देहरादून(शिक्षा का अधिकार)। उत्तराखण्ड के पहले खेल विश्वविद्यालय की स्थापना का रास्ता साफ हो गया है। राजभवन से खेल विश्वविद्यालय के अध्यादेश को मंजूरी मिल गई। विश्वविद्यालय के संशोधित अध्यादेश के मुताबिक कार्यपरिषद में अब राज्यपाल से नामित सदस्य को शामिल किया जाएगा। वहीं, पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी खेल विश्वविद्यालय के कुलपति बन सकेंगे। प्रदेश में खेल विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए सरकार अगस्त 2024 में हुए विधानसभा के मानसून सत्र में राज्य खेल विश्वविद्यालय विधेयक लाई थी। जिससे मंजूरी के लिए राजभवन भेजा गया था, लेकिन खेल विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद में राज्यपाल की ओर से नामित सदस्य को तब शामिल नहीं किया गया था। वहीं, विश्वविद्यालय के कुलपति की नियुक्ति की अर्हता को भी स्पष्ट नहीं किया गया था। यही वजह रही कि राजभवन से विधेयक बिना मंजूरी के लौटा दिया गया। इस पर सरकार अध्यादेश ले आई। मंत्रिपरिषद की पिछले दिनों हुई बैठक में संशोधित अध्यादेश के प्रस्ताव को पास करने के बाद इसे मंजूरी के लिए राजभवन भेजा गया। राजभवन से मंजूरी अध्यादेश के मुताबिक खेल क्षेत्र में विख्यात खिलाड़ियों या शिक्षाविदों से कुलपति की ओर से नामित एक सदस्य को विश्वविद्यालय कार्यपरिषद में शामिल किया जाएगा। खेल विश्वविद्यालय के कुलपति के लिए अर्हता स्पष्ट की गई है। इसमें कहा गया है कि कुलपति के पद पर नियुक्त होने वाले व्यक्ति का पूरा शैक्षिक रिकार्ड उत्कृष्ट होने के साथ-साथ विश्वविद्यालय प्रणाली में आचार्य, निदेशक शारीरिक शिक्षा, वरिष्ठतम खेल प्रशासक, वरिष्ठतम खेल प्रबंधक के रूप में कम से कम दस साल का अनुभव या ऐसा ख्याति प्राप्त खिलाड़ी जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने का अनुभव हो कुलपति के पद के लिए पात्र होंगे।

स्वामी श्रद्धानंद ने खड़ा किया था स्वतंत्रता और वैदिक शिक्षा का आंदोलन : धामी

हरिद्वार(शिक्षा का अधिकार)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानंद महाराज के 99वें बलिदान दिवस पर आयोजित राष्ट्रभक्त महायज्ञ में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने देश की समता के लिए जो प्रयास और संघर्ष किया। वह स्मरण करने का दिन भी है। स्वामी श्रद्धानंद महाराज ने 20वीं सदी के प्रारंभ में भारत में स्वतंत्रता और वैदिक शिक्षा का एक ऐसा आंदोलन खड़ा किया था। जिसने कट्टरपंथियों और अंग्रेजों की नींव हिलाने का काम किया। स्वामी श्रद्धानंद के विचारों से प्रभावित होकर हजारों की संख्या में दूसरे धर्म के लोगों ने पुनः सनातन को अपनाया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद महाराज ने 1902 में हरिद्वार की पवित्र धरती पर गुरुकुल रूपी बीजरोपित किया था। जो आज एक विशाल वट वृक्ष बनकर पूरी दुनिया को वैदिक शिक्षा का प्रकाश एवं शिक्षा देने का काम कर रहा है। यह विश्वविद्यालय न केवल शिक्षा का केंद्र है बल्कि राष्ट्र निर्माण और वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार का भी एक मजबूत स्तंभ है। इस विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली में जहां एक ओर गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी आदि ऋषियों के जीवन दर्शन का पूरा समावेश है। वहीं दूसरी ओर राष्ट्रवाद की भावना का तत्व भी विद्यमान है। इसी विश्वविद्यालय से हजारों शिक्षार्थियों ने विश्व बंधुत्व का भाव लेकर शिक्षा धर्म और समाज सेवा के क्षेत्र में एक वैश्विक पहचान स्थापित की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी



के नेतृत्व में देश कुटुंबकम की भावना से एक पृथ्वी-एक परिवार और एक भविष्य की अवधारणा को वैश्विक मंचों पर साकार कर रहा है। आज भारत की हर उस बात को जो दुनिया के हित में है, मानवता के हित में है, प्रधानमंत्री द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है, उन्हें पूरी दुनिया अपना रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में कोरोना काल में 100 से भी अधिक देशों को हमारी सरकार ने कोविड वैक्सिन उपलब्ध कराने का काम किया था। योग एवं आयुर्वेद को वैश्विक स्तर पर ले जाने, मानवता के एक सूत्र में पिरोने का कार्य प्रधानमंत्री ने किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन, सहयोग से राज्य सरकार भी प्रदेश में सनातन संस्कृति के उन्नयन, संरक्षण, संवर्धन के लिए

लगातार संकल्पित होकर कार्य कर रही है। केदारनाथ के पुनर्निर्माण, बद्रीनाथ धाम का मास्टर प्लान पर तेजी से कार्य हो रहा है। मानसखंड मंदिर माला मिशन पर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने दूर विश्वविद्यालय में सेंटर फॉर हिंदू स्टडीज की पढ़ाई प्रारंभ करने का निर्णय लिया है। जिसमें अनेक प्रकार के शोध और अनुसंधान के कार्य होंगे। इस केंद्र में हिंदू सभ्यता और संस्कृति से जुड़े हुए विभिन्न विषयों पर शिक्षण और शोध के कार्य के साथ अन्य नवाचार के कार्यों को भी आगे बढ़ाया जाएगा। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर सनातन संस्कृति के संवर्धन एवं वैदिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के माध्यम से भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने में अवश्य सफल होंगे।

श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विवि में प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

ऋषिकेश। उत्तराखण्ड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र यूसर्क देहरादून में चतुर्थ वूमेन एंड साइंटिस्ट अवार्ड 2024 के आयोजन के उपलक्ष्य पर आयोजित तकनीकी सत्र में पंडित ललित मोहन शर्मा श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय परिसर, ऋषिकेश की ओर से डीन विज्ञान संकाय प्रो. गुलशन कुमार ढींगरा के निर्देशन में एक प्रदर्शनी लगाई गई। यूसर्क के सहयोग से स्थापित हेरला पीठ केंद्र के अंतर्गत प्लॉट टिश्यू कल्चर लैब में चल रहे अनुसंधान कार्यों को दर्शाया गया। इसके अंतर्गत हेरला पीठ केंद्र के उद्देश्यों जिसमें जैविक खाद के अंतर्गत वर्मी कंपोस्ट से मिट्टी की उर्वरकता को बनाने में सहयोगी सूक्ष्म जीवाणु के पृथक्करण तथा उनका बायोफर्टिलाइजर के रूप में प्रयोग कर उन्नत किस्म के पौधों व फसलों को तैयार किया जा सके कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह, यूसर्क की निदेशक, प्रो. अनीता रावत, विशिष्ट अतिथि माधव सिंह भंडारी, तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आंकार सिंह तथा गोविंद बल्लभ पंत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनमोहन चौहान व कई गणमान्य व्यक्ति द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया राज्यपाल द्वारा पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर, ऋषिकेश द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी की प्रशंसा की तथा उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की विश्वविद्यालय परिसर की ओर से इस प्रदर्शनी में विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. गुलशन कुमार ढींगरा, माइक्रोबायोलॉजी प्रवक्ता शालिनी कोटियाल, रिसर्च स्कॉलर रीना चौधरी तथा मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी के टेक्नीशियन निशांत भाटला रहे।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक पूजा अग्रवाल द्वारा किरण प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु गार्डन, निकट गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी, कनखल-हरिद्वार से मुद्रित कराकर नक्षत्रम् निकट रामऔषधालय, मौ0 होली, कनखल-हरिद्वार से प्रकाशित किया।
सम्पादक
पूजा अग्रवाल
मोबाइल- 9359380850